प्राक्कथन

यशपाल आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य के एक सफल और अद्वितिय साहित्यकार है। आधुनिक काल में साहित्य की विविध विधाओं का विकास हुआ। इसी तरह कहानी का प्रवाह भी अबाध गति से बहता रहा। उसमें जीवन की वास्तविकता का प्रतिबिंब दृष्टिगोचर होने लगा। नारी मनुष्य के जीवन की अर्धांगी है। प्राचीन काल में उसे लक्ष्मी के रूप में प्रतिष्ठित किया था, लेकिन बीच में वह अपने पद से हट गयी और उसे एक उपेक्षित, असहाय तथा दासी का जीवन व्यतीत करना पडा.। आधुनिक कहानीकारों ने नारी को फिर से प्रतिष्ठित करने की चेष्टा की। मार्क्सवादी विचार प्रवाह के कारण यशपाल ने भी अपने साहित्य में नारी का पुनर्मूल्यांकन करके उसे मानवी रूप में उचित स्थान देने का प्रयास किया। उनकी अनेक कहानियाँ इस बात का ज्वलंत उदाहरण है।

एक शिक्षक तथा हिंदी साहित्य प्रेमी होने के कारण यशपाल के उपन्यास तथा कहानियाँ पढने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ । उनकी कहानियों में नारी जीवन का जो सूक्ष्म तथा यथार्थ लेखा-जोखा है, उसने मुझे सोचने को बाध्य किया । आगे चलकर यही आकर्षण अभ्यास में परिवर्तित हो गया ।

यशपाल मनुष्य जीवन के सफल चित्रकार है । जीवन के घात-प्रतिघातों से जूझते हुए उन्होंने समाज के व्यापक धरातल को अतिशय बारीकी से देखा, परखा है । इस प्रयास में सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक धरातल पर नारी को देखने की चेष्टा की । नारी समाज का एक प्रमुख अंग होते हुए भी, वास्तव में वह उपेक्षित, निस्तेज एवं सत्वहिन हो गयी थी । यशपाल ने नारी जीवन के उन तमाम पहलूओं पर प्रकाश डालने की चेष्टा कि है जिसके कारण वह आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टि से गुलाम हो गयी थी।

यशपाल नारी जीवन के सूक्ष्म पारखी है । नारी के भाव-विश्व से भी आप अच्छी तरह वाकिब है । अत: आप नारी को मनुष्य जीवन में सबसे महत्वपूर्ण स्थान देते है । अत: आपने अपनी कहानियों में नारी के उन रूपों को चित्रित किया है जो समय समय पर प्रश्न चिह्न लेकर प्रकट होते है । नारी के इन भिन्न-भिन्न रूपों को मद्दे नजर रखते हुए यशपाल की कहानियों में चित्रित नारी के स्वरूप को स्पष्ट करने का प्रयास मैने इस शोध प्रबंध में किया है । इस सिलसिले के दौरान कुछ प्रश्न सामने आ गये और उनके उत्तर ढूंढना आवश्यक हो गया । वे प्रश्न इस प्रकार है -

१) यशपाल नारी जीवन के सफल चितेरे है । नारी जीवन में प्राप्त अनेक रूपों को उन्होंने अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है । ऐसी स्थिति में आपसे चित्रित नारी का निश्चित स्वरूप क्या होगा ?

२) यशपाल भाव और कल्पना के लेखक नहीं है, बल्कि यथार्थ जीवन के भाष्यकार है। उनपर मार्क्सवाद का स्पष्ट प्रभाव है। अत: उनके नारी पात्रों पर यह प्रभाव कहाँ तक लक्षित होता है।

३) नारी जीवन में प्राचीन काल में और आधुनिक काल में अनेक स्थित्यंतर हुए। इन सब से गुजरते हुए नारी के सामने जो समस्याएं खड़ी हुयी उनका चित्रण करने में यशपाल कहाँ तक सफल हुए।

४) मार्क्स के साथ-साथ फ्रायड का भी प्रभाव यशपाल युग पर था। क्या यशपाल ने अपने नारी पात्रों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करने का प्रयास किया है ?

इन प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत करते समय मैने यशपाल की कहानियों में नारी के स्वरूप का अनुशीलन करने की कोशिश की है।

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध पाँच अध्यायों में विभाजित है।

प्रथम अध्याय में यशपाल के जीवन का सामान्य परिचय दिया है। उनका जन्म, शिक्षा, गुरुकुल जीवन, पारिवारिक जीवन, विवाह, साहित्य साधना के दौर का उल्लेख करते हुए उनकी विविधयामी साहित्य रचना पर प्रकाश डाला है। इस प्रयास में एक विशेष उद्देश्य सामने रखा था कि, साहित्यकार की कृतियों को समझाते हुए ही उनके व्यक्तित्व का परिचय पाना अधिक बेहतर होगा। यशपाल के क्रांतिकारी व्यक्तित्व को उजागर करना ही मुख्य उद्देश्य रहा है।

द्वितीय अध्याय में हिंदी कहानी के इतिहास को प्रस्तुत किया है। हिंदी कहानी के काल-विभाजन के आधार पर यह इतिहास स्पष्ट हुआ है। यशपाल का हिंदी कहानी विधा में क्या स्थान है ? इसका मूल्यमापन भी यहाँ किया है। इसी के साथ-साथ यशपाल के समकालीन कहानीकारों की विशेषताओं को भी परखा गया है। उसके बाद यशपालोत्तर कहानीकारों का परिचय भीपाने की चेष्टा की है। अंत में आधुनिक कहानीकारों की कृतियों की विशेषताओं को भी परखा है। इसके पीछे मेरा यही उद्देश्य रहा कि कहानी के विकास की अखंड परंपरा हमारे सामने साकार हो उठे।

तृतीय अध्याय में यशपाल पूर्व कहानियों में नारी के स्वरूप को उजागर करने की कोशिश की है। इसके लिए प्राचीन भारतीय परंपरा में नारी के स्थान की चर्चा की है। साथ ही प्रेमचंद पूर्व कहानियों में नारी, प्रेमचंद युगीन कहानियों में नारी, और प्रेमचंदोत्तर कहानियों में नारी आदि उपविभागों के जरिए नारी के स्वरूप तथा समस्याओं को स्पष्ट किया है। अंत में मार्क्स तथा फ्रायड के प्रभावस्वरूप हिंदी कहानी में नारी का जो रूप साकार हो रहा है उसकी भी चर्चा की है। इसके फलस्वरूप हिंदी कहानी विधा में नारी के विकसित और परिवर्तित स्वरूप का स्पष्ट परिचय मिलता है।

चतुर्थ अध्याय - यशपाल की कहानियों में नारी चित्रण अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। यशपाल की कहानियों को पढने के बाद जो मैने महसूस किया, उसे इस अध्याय में अभिव्यक्त किया है। यशपाल ने जिन कहानियों में नारी जीवन को चित्रित किया है, उन कहानियों का विश्लेषण करने की यहाँ भरकस कोशिश की गयी है।

पाँचवा अध्याय यशपाल का नारी विषयक दृष्टिकोन स्पष्ट करता है। इसमें यशपाल की दृष्टि में नारी का स्वरूप, उसकी समस्याएँ और समाधान आदि बातों पर सूक्ष्म दृष्टिसे विचार किया है। सामाजिक धार्मिक, आर्थिक तथा मनोवैज्ञानिक दृष्टिसे नारी की जो वास्तविक समस्याएँ है उनका चित्रण यशपाल ने किस प्रकार किया है इसकी चर्चा यहाँ गंभीर रूप से की गयी है।

छठा और अंतिम अध्याय उपसंहार का है। ` यशपाल की कहानियों में नारी ` स्वरूप और समस्याएं आदि विषय पर सोचने के बाद जो निष्कर्ष हाथ लगे उन्हें उपसंहार के इस छठे अध्याय में सार के रूप में रखा है। एक सफल तथा प्रभावी कहानी लेखक की हैसियत से यशपाल की जो विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती है उनका संकेत दिया गया है।

इस शोध-प्रबंध के अंत में सहायक ग्रंथों की सूची जोड दी है, जो मुझे इस शोध-कार्य के सिलसिले में विशेष सहायक सिध्द हुयी।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध डा.के.पी. शहा जी के कृपापूर्ण निर्देशन में लिखा गया है। यह बात मेरे लिए विशेष गौरव की है। अपनी व्यस्तताओं के बावजूद भी सतत प्रेरणा और प्रोत्साहन देकर आपने मेरी सहायता की है। इस कार्य के संबंध में आयी हर कठिनाई में आपने मेरा साथ दिया। आपके इस स्नेह, प्रेरणा और आशीर्वाद का मै सदैव ऋणी रहूंगा।

हमारी संस्था के अध्यक्ष आमदार विनायकरावजी पाटील भूतकालीन प्राचार्य व्ही.बी. बिल्वे जी को धन्यवाद देते हुए उनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। महाविद्यालय के प्राचार्य कॅप्टन जाधव, हिन्दी

विभागाध्यक्ष प्रा. गुमास्ते, राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख प्रा. कोकाटे आप सब मेरे पथ प्रदर्शक है, जिनका सक्रीय योगदान मेरे इस शोध कार्य में महत्वपूर्ण रहा। प्रा. शिवाजी मुंढे, सांगोला महाविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष प्रा. विजय जाधव, महावीर महाविद्यालय के डॉ. सुनील-कुमार लवटे और साथ ही शिवाजी विश्वविद्यालय के तथा कुर्डुवाडी महाविद्यालय के ग्रंथपाल श्री. जोशी एवं अन्य सभी कर्मचारियों का मुझे सामग्री उपलब्ध करा देने में बहुत बडा हाथ रहा है, सभी को धन्यवाद देते हुए मैं आभार व्यक्त करता हूँ। भविष्य में भी इन सभी लोगोंसे आशीर्वाद तथा सहयोग की कामना रखते हुए मैं अपना यह लघुशोध प्रबंध अवलोकन के लिये समीक्षकों के सामने प्रस्तुत करता हूँ।

आपका कृपापार्थी

(ए.एल. शेंडे)

कोल्हापूर
दिनांक : २४-११-१९४९